National Research Journal of Business Economics
Volume No: 11, Issue No: 1, Year: 2024 (January- June)
PP: 42-50
ISSN No: 2349-2015
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में सांप्रदायिकता का निषेध

कंचन रजक

(शोधार्थी)

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

शोध-सार :–

गीतांजलि श्री हिंदी कथा-साहित्य की महत्वपूर्ण लेखिका हैं। जिन्हें बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। गीतांजलि श्री अपने कथा-साहित्य में निहित संप्रदायिकता विरोधी चेतना का विश्लेषण करती हैं। उनके लेखन में सांप्रदायिकता केवल धार्मिक संघर्ष के रूप मे परिलक्षित नहीं होती, बल्कि सामाजिक संरचना, राजनीतिक सत्ता और मानवीय संबंधों के विघटन के रूप में प्रस्तुत होती है। उनके कथा-साहित्य में सांप्रदायिकता आमजन जीवन में व्याप्त अविश्वास, भय और मौन के रूप में उभरती है। गीतांजलि श्री के चयनित कथा-साहित्य 'हमारा शहर उसबरस', 'रेत समाधि', 'बेलपत्र', 'यहां हाथी रहते थे' और 'आजकल' के माध्यम से सांप्रदायिकता वैमनस, हिंसा, तनाव आदि के साथ मनोवैज्ञानिक और संवेदनात्मक प्रभाव भी देखने को मिलता हैं। उनकी कथा-दृष्टि मानवीय संवेदनात्मक, स्मृति और करुणा, स्त्री अनुभव को केंद्र में रखकर सांप्रदायिक विभाजन का निषेध करती है। लेखिका की लगभग तमाम रचनाएँ इन्हीं सांप्रदायिक ध्रुव को केंद्र में रखकर उससे उत्पन्न सवालों को उठाती नजर आती है।

बीजशब्द : सांप्रदायिकता, हिंसा, निषेध, संवेदना, हिंदू, मुसलमान, मानवीय संवेदना।

प्रस्तावना–

साम्प्रदायिकता भारतीय समाज की गंभीर समस्या है। भारत एक बहुधार्मिक देश है। यहाँ विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। इनमें आपसी सद्भाव तो है, पर कभी-कभी उनमें तनाव भी आते रहते है। संख्याबल की दृष्टि से सबसे बड़ी आबादी हिन्दुओं की है। इसके बाद मुसलमान हैं, जो भारत में अल्पसंख्यक समुदाय में आते हैं। इनमें संवाद और विवाद प्रायः देखने को मिलता है। आलोचक **शिवकुमार मिश्रा** सम्प्रदायिक नीतियों को रेखांकित करते हुए लिखते हैं- **"सांप्रदायिकता की समस्या, जैसी कि वह आज है, आधुनिक युग की देन है और इसके पीछे नवजागरण तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के अपने अंतर विरोधों के अलावा अंग्रेजों की प्रसिद्ध 'फूट डालो राज करो' कि वह नीति है जिसे उन्होंने बराबर जारी रखा। संभव है नव जागरण तथा मुस्लिम आंदोलन की हिंदूवादी परिणीति न होती, तो यह नीति कारगर न**

© Copyright @ Authors

ISSN No: 2349-2015
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

होती, किंतु हिंदुवाद के जो संस्कार जाने अनजाने नव जागरण तथा स्वाधीनता आंदोलन में आए हैं उनके चलते धर्म के आधार पर हिंदू मुसलमान को बांटने में अंग्रेजों को सुविधा और सरलता हुई।"[1] इसका दुष्परिणाम 15 अगस्त 1947 को प्रकट हुआ, जब देश का विभाजन हो गया। इस सम्प्रदायिकता के बीज से ही भारतीय राजनीतिक और सामाजिक एकता प्रभावित हुए हैं। 20वीं सदी के अंतिम दो दशकों में साम्प्रदायिकता विकराल रूप में पुनः प्रकट हुई। साम्प्रदायिक भाव का जन्म राजनीतिक घटनाक्रम के बीच से हुआ है। सांप्रदायिकता आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का विरोध करते हुए जन्मी है। बाबरी मस्जिद का ध्वंस इसका उदाहरण है। साम्प्रदायिक तनाव अन्य समुदायों के बीच भी है, पर यह प्रमुख रूप से हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच रहा है। गीतांजलि श्री का लेखन-काल इन्हीं साम्प्रदायिक तनाव का उत्कर्ष काल रहा है। ऐसी स्थिति में इनकी रचनाओं पर इसका प्रभाव स्वाभाविक है।

गीतांजलि श्री अपनी रचना 'हमारा शहर उस बरस', 'खाली जगह', 'रेत-समाधि', 'यहां हाथी रहते थे', 'बेलपत्र' और 'आजकल' उपन्यासों और कहानियों में सामाजिक-राजनीति यथार्थ के साथ गहरी मानवीय अनुभवों, स्मृति, हिंसा और सामाजिक एवं पारिवारिक दरारों के माध्यम से सांप्रदायिकता के प्रभावों को उभारती है। जहां सांप्रदायिकता सत्ता की आलोचना करते हुए विभाजन की पीड़ा, मानव संबंधों का टूटना, स्त्री दु:ख, प्रेम-प्रसंग और सह-अस्तित्व और सीमाओं को लांघने की आकांक्षाको केंद्र में रखती है।

जब धर्म को संकुचित अर्थों में लिया जाता है, तब सांप्रदायिकता की भावना फैलती है। मेरा धर्म और मेरा संप्रदाय ही सर्वश्रेष्ठ है– यही भावना सांप्रदायिकता को बढ़ावा देती है। वर्तमान समय में सांप्रदायिकता का ज़हर देश के कई भू-भागों में दिखाई देती है। ऐसी परिस्थिति में एक धर्म दूसरे धर्म के विरुद्ध विद्वेष और टकराव की भावना को जन्म देता है। गीतांजलि श्री के उपन्यास **'हमारा शहर उस बरस'** में भी सांप्रदायिकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इस उपन्यास में भारत-विभाजन की त्रासदी से लेकर बाबरी मस्जिद के विध्वंस तक विस्तृत धार्मिक और सांप्रदायिक वर्चस्व के हिंसात्मक यथार्थ को प्रमुख रूप से व्याख्या किया गया है। लेखिका ने अपने उपन्यास में लिखा है- **"उस बरस हमारे शहर में हिंदुओं ने शांति प्रियता छोड़ दी थी। अबके ऐलान करके छोड़ी कि एक गाल पर तमाचा पड़ा तो दूसरा बढ़ा दिया पर अब तीसरा गाल कहां से लावे ? हम मजबूर है, वे चीखें। मस्जिदों पर सवार होकर त्रिशूल की नोंक पर देवी की पताका फहराने लगें कि जो हमारे संग हुआ है- वही हमें उनके संग करना है। पाप का बदला पाप से चुकेगा।"**[2] शहर के इस बदले की भावना से आहत होकर शरद, श्रुति और हनीफ ने ठान लिया कि अब लिखना है, **"कि इस वक्त चुप नहीं रहा जा सकता। सबकुछ खोल कर रख देना**

© Copyright @ Authors

ISSN No: 2349-2015
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

है। कि जो हवा चल रही है, वह हवा नहीं , बंवडर है, जो हमें कहीं उखाड़ न दे।"[3] तीनों ने दृढ़ संकल्प लिया है कि सांप्रदायिकता विरोधी तमाम ताकतों के साथ दकियानूसी तथा रुढ़िवादी ताकतों को पछाड़ देंगे। लेखिका ने अपने उपन्यास **'हमारा शहर उस बरस'** में सांप्रदायिकता के बदलते हिंसात्मक स्वरुप को रेखांकित करती हुई लिखती है- **"एक संप्रदाय के चार युवकों ने दूसरे संप्रदाय के इक्के चालकों को जबरन नीचे खींचकर उसकी आंखें फोड़ दी। भीड़ जमा हुई तो पुलिस को आंसू गैस छोड़नी पड़ी, कुल मिलाकर दो मरे, छः घायल हुए, अब स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण में है, ऐहतियातन कर्फ्यू लगा दिया गया है।"**[4] इस प्रकार की घटनाएं पुरे शहर में घटती रहती थी। उपन्यास के केंद्र में विश्वविद्यालय और मठ है, जो सांप्रदायिकता को हवा देता है। मठ हिंदू सांप्रदायिकता का प्रतीक है, जो जनवादी और सांप्रदायिक फासीवाद की लड़ाई में घी डालने का काम करती है। मठ की तरफ से आने वाली भीड़ उत्तेजित थी। हिंदुओं को जागरण का संदेश दिया जा रहा था, यथा- **"हिंदू जागो, देश बचाओ। कि नहीं तो हम पर अन्याय बढ़ता जाएगा। हमारे रक्त को नदियां बहेंगी। बह रही है। मंदिर और गुरुद्वारे नष्ट होंगे। हो रहे हैं। हमारी इज्जत और संपत्ति लूट जाएगी। हमारी लड़कियों का सरे आम अपहरण होगा। हो रहे है। लूट रही है। हिंदू कुत्ते बिल्ली की तरह मारे-मारे फिरेंगे। फिर रहे हैं। मार तो हिंदू सारी दुनिया में खा रहा हैं.....अपने ही देश में तुम दूसरे और तीसरे दर्जे के नागरिक हो। औरों के लिए तो पचासों देश है, पर हमारे लिए तो बस हिंदुस्तान है।"**[5] इसी बदले की भावना के कारण सभी जगहों पर दंगे होने लगे। हिंदू सोचने लगे कि उनकी बेटियां यूंही लुटती रहे, तो क्या वह हिजड़े की तरह असहाय बनकर बैठे रहे ? मठ की दीवारों पर किसी ने लिख दिया- **हंस के लिया पाकिस्तान लड़कर लेंगे हिंदुस्तान।** इस प्रकार के पोस्टर और नारे सांप्रदायिकता को हवा देती है। लोगों के भीतर इंसानियत की जगह जानवर आ गया था। पूरे शहर में दो ही शब्द गूंज रहे थे- 'हिंदू' और 'मुसलमान'। जब हनीफ शरद और श्रुति शहर की गलियों में निकलते हैं, तो उन्हें जल चुकी छतों और दीवारों का ऊंचा-नीचा मलबा दिखाई पड़ता। बिजली के खंभे तक दंगाइयों ने चुरा लिए थे।

विश्वविद्यालय राजनीतिक जंग का अखाड़ा है। मठ से उठता सांप्रदायिक वर्णन से हिंसक राजनीतिक विश्वविद्यालय तक आ जाती है। विश्वविद्यालय आज धार्मिक स्थल बन चुका है। विश्वविद्यालय के विभाग राजनीतिक और सांप्रदायिकता का मैदान बन चुका है, जहां व्यक्ति की उपलब्धियां उसके धर्म के साथ जोड़कर देखी जाने लगी है जिसके परिणामस्वरुप हनीफ मुसलमान होने के कारण 'हेड ऑफ डिपार्टमेंट' नहीं बन पाता है। हनीफ को जान से मारने की धमकी भरे पत्र बार-बार मिलते रहते हैं। शरद अखबार पढ़ता है। इसमें ए.बी.वी.डी. के छात्राओं का पत्र सुनता है- **"सांप्रदायिक जहर फैलानेवाले यह है...हम यूनिवर्सिटी में पढ़ने आते हैं।**

© Copyright @ Authors

ISSN No: 2349-2015
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

यहां यह राजनीतिक घुसा रहे हैं।.....आज तक हम यही जानते हैं कि हम हिंदुस्तानी हैं, यह हमें जबरदस्ती सांप्रदायिकता की सीख दे रहे हैं। छात्रों को गुमराह करके उन्हें धर्म के बैरी बना रहे हैं।"[6] जहाँ एक तरफ आज विश्वविद्यालय के विभाग सांप्रदायिक और राजनीतिक चर्चा का केंद्र बन गया है, तो वहीं दूसरी तरफ छात्राओं को भी सांप्रदायिकता की आग में झोंकने के लिए उकसाया जा रहा है।

गीतांजलि श्री यह उपन्यास में हिंदू और मुस्लिम दोन की सांप्रदायिक भावना को रेखांकित करती है। लेखिका अपने उपन्यास में लिखती है- **"हिंदू में भी संप्रदायिक भावनाओं की कभी कमी नहीं रही। कभी भड़के तो बाहर आ गई, नहीं तो शांति से अंदर पड़ी रही"**[7] हिंदू और मुसलमान के सांप्रदायिक विचारों के कारण पूरे शहर में तनाव का माहौल बना हुआ है। शहर में चारों तरफ कर्फ्यू और हड़ताल की घोषणा हुई है, जिससे आर्थिक तंगी, राजनीतिक तनाव, वोट-बैंक की राजनीति और युवाओं में कुंठाए पनपा रही है।

इस उपन्यास में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता के संदर्भ में वरिष्ठ कथा-आलोचक **वीरेंद्र यादव** लिखते हैं- **"गीतांजलि श्री का उपन्यास 'हमारा शहर उस बरस' सांप्रदायिकता एवं कट्टरता के विमर्शों को विभिन्न धरातल पर प्रस्तुत करता है। यहां धर्मनिरपेक्षता, धार्मिक सहिष्णुता, महजबी कट्टरपन एवं राष्ट्रवाद की प्रचलित पदावली का विखंडन करते हुए, उस मनोदशा की पड़ताल की गई है, जो अंततः सांप्रदायिक होने को अभिशप्त है। गीतांजलि श्री भारतीय समाज की अतल गहराइयों में जड़ जमा उस धर्म ग्रंथि की पड़ताल करती है, जो अवसर पाते ही सांप्रदायिकता के बारुद में चिंगारी का काम करती है।"**[8] गीतांजलि श्री का उपन्यास 'हमारा शहर उस बरस' हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिकता का बहुत ही त्रासदीपूर्ण चित्रण प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास हमारे अतीत के साथ-साथ वर्तमान का भी आईना है।

भारत-पाकिस्तान विभाजन के दौरान जो सांप्रदायिक दंगे हुए वे मानव इतिहास के सबसे लहूलुहान पन्ने हैं जिसको उपेक्षित करके विभाजन की कोई भी कहानी पूरी नहीं की जा सकती। गीतांजलि श्री की 'अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार' से नवाजा गया उपन्यास 'रेत-समाधि' फ्लैश बैक पद्धति में भारत-विभाजन से सम्बंधित एक ऐसी कहानी है, जिसमें अस्सी वर्ष के वृद्ध मां अपने पति की मृत्यु के बाद पूरे परिवार से मुंह मोड़ लेती है, पर वह जीवन से मुंह नहीं मोड़ती है। उपन्यास के तीसरे खंड **'हद-सरहद'** के अंतर्गत मां अपने अतीत के चलचित्र को प्रस्तुत करती है। जहां वह बताती है कि कैसे भारत-पाकिस्तान विभाजन के त्रासदी में अपने प्रेमी अनवर से अलग होकर पाकिस्तान से भारत आ गई थी। अपने जीवन के आखिरी अध्याय में मां अपने विभाजित जीवन की कड़ियों को जोड़ने के लिए पाकिस्तान वापस लौटती है। मां कहती है- **"हमने भी प्यार**

© Copyright @ Authors

ISSN No: 2349-2015
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

किया और सुनो जी इंसानी रिश्ते की सरहदें न कभी थी और न कभी होगी। रूढ़िया तब भी होती थीं, उन्हें तोड़कर आगे निकल जाने वाले तब भी होते थे।"[9] मां पाकिस्तान लौटने पर अपने प्रेमी अनवर से मिलती है। दोनों ने अलग-अलग मजहब के होते हुए भी प्रेम किया था और 'स्पेशल मैरिज एक्ट'- 1870 के तहत कोर्ट-कानून की धर्म से अलग होकर शादी की थी। भारत-पाकिस्तान के विभाजन की आंधी में दोनों का रिश्ता कहीं गुम हो गया था।

इस खंड में सरहद की जो अवधारणा बनी हुई है उसका नवीन अर्थों में प्रस्तुतीकरण हुआ है। लेखिका लिखती है- **"बॉर्डर इश्क है। इश्क जेल नहीं बनाता, हर रोक लांघने के लिए सितारे बिछाता है। बॉर्डर मिलन की रेखा है। इधर और उधर के जोड़ने को अलग बगल लाकर खुशनुमा बनाने को। दोनों की मुल्क के लिए होता है। दोनों की मुलाकात के लिए होता है। संगम।"**[10] मां के लिए सरहद मिलन के लिए है। सरहद किनारा है, जो एक-दूसरे को जोड़ता है। मां समाधि से उठकर सरहद लांघतीं है। रेत में आकर बनती है। रेत से सरहद मिट जाती है। मां कहती है कि **"सरहद बंद नहीं करती। खोलती है। आकर बनती है। किनारा सजाती है। किनारी का इस तरफ भी खिल जाता है और उसे तरह भी। नक्काशी कर लो, बेलबूटे टिमका दो, असली नगीने लगा दो। क्या है बॉर्डर ? वजूद को उभरता है। ताकत देता है। ना कि चीरता।"**[11] मां के लिए सरहद कुछ नहीं रोक सकती। मिलन की उम्मीद दो अंगों के बीच का पुल होता है। रात और दिन के बीच। जिंदगी और मौत के बीच। पाने और खोने के बीच। सरहदें भी जुड़ती हैं। यह उन्हें अलग नहीं कर सकती।

भारत-पाकिस्तान विभाजन के त्रासदी को मां याद करते हुए कहती है- **"उठाया। पटका। ट्रक। या क्या। एक की दो और पट्टाधारी। ट्रक में लड़कियां। उसी जैसी सोलह। सत्रह। उन्नीस। रोती। बिसुरती। एक पर एक। भेड़ बकरियां। कीड़ियां। उसने हाथ काटा। पट्टाधारी ने चांटा लगाया। आंखें डरावनी। डोरे लाल। माथे पर गुमड़। आग में उसे घसीटते लाने में जल गया हो, ऐसा भुसा रंग।.....लड़कियां चुप रहने लगी। कोई बोली हमसे धंधा करवाएंगे। कोई बोली हमें दबोचेंगे। फिर चुप। हाथ पकड़ कर बैठी रहें। कभी अलग अलग पड़ी रहें।"**[12] कहना गलत होगा कि सांप्रदायिक हिंसा का मार सबसे ज्यादा स्त्रियां ही झेलती आयी है।

'रेत-समाधि' उपन्यास में लेखिका सरहद के माध्यम से वर्तमान भारत की संप्रदायिक नीतियों को रेखांकित करते हुए कहती है- **"हिंदुस्तान पाकिस्तान की दोस्तियों की किसे पड़ी है? जमाना तो होड़ और दुश्मनियों का डंका बजाने का हो चला।.... हिंदुस्तान पाकिस्तान की यों साफ़ नजर आती है। बतियों से पटी, कि एलियन सोच ले कि इस गृह पर इस जगह हमेशा जश्न का माहौल रहता है। उसे क्या पता कि अलगाव जताना कुछ लोगों के लिए जश्न बन गया है?**

© Copyright @ Authors

ISSN No: 2349-2015
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

जश्ने-दुश्मनी जोशे-दरार।"[13] 'रेत-समाधि' में मां अपने समय, समाज एवं मजहबी सरहदों को चुनौती देते हुए अनवर से प्रेम करती है और उससे विवाह भी करती है। भारत–पाकिस्तान विभाजन की सांप्रदायिक राजनीति इन दोनों को अलग तो कर देती है, पर उनके बीच का आत्मिक सम्बंध कभी नहीं टूटता। जीवन के अंतिम अध्याय में मां एक बार फिर उसी सांप्रदायिक वैमनस्यता के विरुद्ध खड़ी होती है और सरहद लांघकर अपने प्रेमी अनवर से मिलने पाकिस्तान पहुँच जाती है। किंतु सीमा पर चली गोलियाँ उसके जीवन का अंत कर देती हैं। इस प्रकार मां अपने प्रेम और अपनी स्मृतियों के लिए अपने प्राण इसी मिट्टी को अर्पित कर देती है। वह पाकिस्तान की रेत में विलीन होकर मानो स्वयं 'रेत-समाधि' बन जाती है।

गीतांजलि श्री ने उपन्यासों में सांप्रदायिकता का विवेचन किया है। क्योंकि वहां कथ्य को इसकी आवश्यकता थी, परंतु कहानियों में सांप्रदायिकता से प्रभावित विषय को रेखांकित करती है। उनकी पहली कहानी 'बेल-पत्र' में ओम और फातिमा ने समाज और महजब को चुनौती देकर अंतरधर्मीय प्रेम विवाह किया। दोनों के विवाह में अकेले जगदीश काका थे। नसीहत के तोर पर कहा था कि **"देखो इस समाज की ताकत को मामूली न समझो। उसके बारे में अपनी नियत तय कर लो। खूब तू-तू होगी, यह समझ लो। उससे घबराते हो तो सोच लो। दुनिया के आगे चाहे मुस्कुराता मुखौटा चढा लोगे, अंदर चूर-चूर होते जाओगे।झेल सकते हो, हिम्मत है, तो आगे बढ़ो। हम सब तुम्हारे साथ हैं। यह नकली भेदभाव तुम बच्चों के मिटाए ही मिटेंगे। पर फिर ठीक से समझ लो। जाने दो जो होता है.....नाम, खानदान, किसी का गम न करो।"**[14] परंतु कभी-कभी रिश्तेदार या आस-पड़ोस वाले अपने सांप्रदायिक मंतव्य व्यक्त करा ही देते हैं, जिससे दोनों के संबंधों में सांप्रदायिकता का दरार पड़ने लगते हैं। ओम की मां फातिमा को देखकर रिश्तेदारों से कहती है- **"मेरी बहू किसी कोने से मुसलमान है ही नहीं।"**[15] आए दिन ऐसे किस्से होते रहते थे। जिससे फातिमा को दुख और गलती का एहसास होता रहता था। ओम के बाबा कहां करते थे कि **"राह चलते कभी सांप और मुसलमान मिल जाए तो पहले मुसलमान का खत्म करो, फिर सांप का।"**[16] यही तथ्य सम्प्रदायिकता के वैमनस्य को बढाता है। सम्प्रदायिकता की विष इतनी गहरी होती है कि मजबूत-से-मजबूत संबंधों को भी खत्म और रिश्ते के गर्माहट को राख में बदलने की ताकत रखती है। जीवन भर साथ रहने वाले लोगों के बीच अविश्वास की दीवारें खड़ी कर दी जाती है।

सांप्रदायिकता से ग्रस्त भावना केवल रिश्तों और संबंधों को ही नष्ट नहीं करती, बल्कि इन्सान को अपने घर और शहर से भी दूर करती है। गीतांजलि श्री की कहानी **'आजकल'** में सांप्रदायिक वैमनस्य से ग्रस्त व्यक्ति की मनोभावना का चित्रण किया गया है। कैसे एक व्यक्ति अलग धर्म होने

© Copyright @ Authors

ISSN No: 2349-2015
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

के कारण अपने ही हर में चोर बनकर आया है। समीक्षक शशिभूषण द्विवेदी ने 'आजकल' कहानी के लिए लिखा है कि **"'आजकल' कहानी सांप्रदायिक उन्माद के अंतराल की एक अद्भुत कहानी है। इसे आप गुजरात दंगों से जोड़कर देख तो चीज और भी साफ होती जाएंगी। एक हिंदू घर के बरामदे में इस तरह बैठा है कि वह हिंदू है, नि:शंक बैठ जाता है। दरअसल वह घबराया हुआ है। घर उसके मुसलमान मित्र का है जिसे दंगों के माहौल में अचानक भागना पड़ा है।"**[17] कहानी में सांप्रदायिकता से उठी अफवाह, भय और लाचारी को रेखांकित किया गया है। मकान खरीदते समय भी यह देखा जाता है कि यह हिंदू मौहल्ला है या मुसलमान मौहल्ला। सुरक्षा पहले देखी जाती है, लेकिन आजकल सांप्रदायिकता कि आग हर जगह फैली हुई है। कोई भी मौहल्ला सुरक्षित नहीं है। आजकल होलिका दहन के लिए लकड़ी इकठ्ठा किया जा रहा है। लेखिका लिखती है कि **"कुछ भी दहन हो सकता है। आग तो आग है और दिल तो इतने रूखे-सूखे की धड़कनें में कोई देर नहीं लगती। फिर क्या होलिका दहन और क्या शहर का दहन, और क्या इस संसार का ही दहन, कोई भरोसा नहीं कि आग कहां पहुंच जाएगी।"**[18] सांप्रदायिकता की झगड़े इतने बढ़ चले है कि हिंदू मित्र ने मुसलमान के घर जाकर रहना उचित समझा, ताकि उसके मुसलमान मित्र का घर सुरक्षित रहें।

सांप्रदायिकता के कारण व्यक्ति केवल अपने घर से ही नहीं वरण शहर से भी दूर हो जाता है। शहर का कायाकल्प ही बदल जाता है। सांप्रदायिक वैमनस्य के कारण शहर किस प्रकार बदल जाता है; इसे गीतांजलि श्री की कहानी **'यहां हाथी रहते थे'** में देखा जा सकता है। कहानी का प्रारंभ ही इस कटुयथार्थ से हुआ है कि **"इस शहर को दंगों ने मशहूर कर दिया। दंगों की बिना पर नहीं, दमक ठसक की बदौलत, जो बेशक दंगों के कारण आई। न होता शहर घिचपिच तो ऐसी तबाही न मचती। नमचती तो ऐसी सफाई ना होती। संप्रदाय इतनी सफ़ाई से बंट गए हैं कि शहर चमक गया।"**[19] एक समय शांत और सहज लगने वाला शहर, हरे भरे पेड़-पौधे से घिरे शहर अब आधुनिकतम ढांचे में बदल गया है। एक बुढ़ी हर दिन अपने अतीत के चलचित्र में शहर को याद करती है। अब उस शहर में हाथी नहीं दिखते। अब केवल चारों तरफ कल कारखाने और आधुनिकतम फ्लैट और अपार्टमेंट दिखते हैं। सम्प्रदायिक दंगों के कारण शहर का काया ही बदल गया है। पुरानी यादें नयी यादों के नीचे दब गयी है।

निष्कर्ष :–

गीतांजलि श्री के कथा-साहित्य में सांप्रदायिकता एक महत्वपूर्ण एतिहासिक व राजनीतिक यथार्थ के रूप में उपस्थित होती है। उनकी लेखनी में सांप्रदायिकता केवल बयानबाजी नहीं करती, बल्कि गहरी मानवीय अनुभव, स्मृति, हिंसा और सामाजिक दरारों के माध्यम से

© Copyright @ Authors

ISSN No: 2349-2015
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

सांप्रदायिकता के प्रभाव को उभारती है। उपन्यास 'रेत-समाधि' में ऐतिहासिक सांप्रदायिक के उस मानवीय पक्ष को उभारती है, जो अक्सर राजनीतिक सत्ता में दबा दी जाती है। अम्मा पितृसत्ता और सांप्रदायिकता के सरहदों को चुनौती देकर तथा अपने प्रेमी से मिलकर रेत-समाधि में विलीन हो जाती है। वहीं कहानी 'बेल-पत्र' में इंसानी रिश्ते धर्म और मजहब से उठकर नयी जीवन की शुरुआत करती है, परंतु सांप्रदायिकता के विष ने उनके रिश्ते को भी जर्जर बना दिया। कहानी 'यहां हाथी रहते थे' में देखते है कि छोटे शहर और कस्बों के आपसी सह-अस्तित्व पर सम्प्रदायिक दंगों और तनाव की छाया ने शहर के काया को बदल डाला है। 'आजकल' कहानी में सांप्रदायिकता के भय के माहौल को दिखाया गया है। इस भय के कारण इंसान अपने ही घर और शहर से दूर हो जाता है। 'हमारा शहर उस बरस' उपन्यास भारत विभाजन की त्रासदी से लेकर बाबरी मस्जिद के विध्वंस तक विस्तृत धार्मिक और सांप्रदायिक वर्चस्व के यथार्थ को रेखांकित करता है। यह उपन्यास अतीत का बंद अध्याय न होकर वर्तमान के यथार्थ की खुली किताब के समान प्रस्तुत होता है। गीतांजलि श्री अपनी रचनाओं में सांप्रदायिक उन्माद से ग्रस्त इन्सान के उस मानवीय पक्ष को उजागर करती है, जिसे राजनीति और धार्मिक सत्ता अपने स्वार्थों के कारण अक्सर दबा देते हैं। उनकी रचनाएं यह दिखलाती है कि कैसे हिंसा, भय और विभाजन की आग में मनुष्य की करुणा, स्मृति और संवेदना कुचली जाती है और कैसे वही संवेदना साहित्य में आवाज पाकर एक गहरे सामाजिक यथार्थ को उजागर करती है।

संदर्भ सूची :–

1. मिश्र शिवकुमार, सांप्रदायिकता और हिंदी उपन्यास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2015, पृ. 28
2. श्री गीतांजलि, हमारा शहर उस बरस, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022, पृ. 10
3. वही पृ. 7
4. वही पृ. 19
5. वही पृ. 22
6. वही पृ. 268
7. वहीं पृ. 89
8. स. डॉ सिंह नामवर, आधुनिक हिंदी उपन्यास भाग 2, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2010 पृ. 34।

© Copyright @ Authors

ISSN No: 2349-2015
Peer Reviewed & Refereed Journal
National Research Journal

9. श्री गीतांजलि,रेत-समाधि, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण, 2022, पृ. 342
10. वही, पृ. 333
11. वही, पृ. 333
12. वही, पृ. 302
13. वही, पृ. 363
14. श्री गीतांजलि, अनुगूंज, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 1994, पृ. 31
15. वही, पृ. 26
16. वही, पृ. 26
17. श्री गीतांजलि,प्रतिनिधि कहानियां, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 7
18. वही, पृ. 76,77
19. श्री गीतांजलि, यहां हाथी रहते थे, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2022, पृ. 11

© Copyright @ Authors